SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कोविड–19 के दौरान प्राथमिक स्कूल के बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा, माता–पिता का विश्वास एवं दृष्टिकोण

आरती दीवान, (Ph. D.), गृह विज्ञान विभाग,
इंदिरा गांधी शासकीय कला एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
वैशालीनगर, भिलाई, जिला–दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
आरती दीवान, (Ph. D.), गृह विज्ञान विभाग,
इंदिरा गांधी शासकीय कला एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वैशालीनगर, भिलाई,
जिला–दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 16/06/2021
Revised on : -----
Accepted on : 23/06/2021
Plagiarism : 02% on 16/06/2021

शोध सार

कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिये लॉकडाउन के कारण स्कूल बंद थे, नतीजन ई–लर्निंग विशिष्ट उदय के साथ शिक्षा में बहुत बदलाव आया जिससे शिक्षण डिजिटल प्लेटफार्म पर किया जा रहा है। ऑनलाइन कक्षा ने अब छात्रो के जीवन में मुख्य स्थान ले लिया है। 06 से 12 वर्ष की शिक्षा को प्रारंभिक शिक्षा कहते है। ऑनलाइन सीखने की प्रभावशीलता आयु समूहों के बीच भिन्न–भिन्न होती हैं। छोटे बच्चों पर एक आम सहमति यह है, कि उन्हें एक संरचित वातावरण की आवश्यकता है, क्योंकि बच्चे अधिक आसानी से विचलित होते है। ऑनलाइन प्राथमिक शिक्षा के छात्रों के लिये आमने–सामने कक्षाओं के विकल्प के रूप में उभरी है। छोटे बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा में शिक्षक के साथ अभिभावक का भी सहयोग होता है। अभिभावक के लेपटाप, मोबाइल, नेट कनेक्शन की सुविधा से ही बच्चा ऑनलाइन कक्षा में प्रवेश कर पाता है। ऑनलाइन शिक्षा ने बेशक कोविड–19 के दौरान बच्चों को शिक्षा से जोड़ा है। सभी पाठ्यक्रम, परीक्षायें, पाठ्योत्तर गतिविधियाँ ऑनलाइन हो रही है, परन्तु प्राथमिक शिक्षा के बच्चों के लिये लगातार इस गतिविधियों में जुड़े रहना एक चुनौती से कम नही है। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में इन्टरनेट कनेक्टिविटी या अभिभावकों के पास स्मार्टफोन या लैपटाप न होना भी प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के लिये एक समस्या है। ऑनलाइन शिक्षा के प्रति बच्चों एव अभिभावकों को जागरूक कर रूचिकर कक्षा के लिये हमें प्रयास करना होगा। भविष्य में इसकी अनिवार्यता समझकर इसके लिये हमें प्रयास करना होगा। ऑनलाइन शिक्षा के अभ्यस्त होनें पर भौतिक कक्षा की अनुपस्थिति पर यह एक बेहतर विकल्प हो सकता है।

मुख्य शब्द

ऑनलाइन शिक्षा, लाभ–हानि, निर्देशन, कोविड–19.

प्रस्तावना

प्राथमिक शिक्षा बाल मनोवैज्ञानिक के अनुसार 06 से 12 वर्ष तक मानी जाती है। बालक की वैसे सभी अवस्थायें अपने अलग–अलग विशेषताएँ लिये हुए है। यह बाल्यावस्था का काल है, और यह बालक के जीवन का अनोखा काल माना जाता है। इस काल में बालक के मूल्य, आदर्श और दृष्टिकोण का निर्माण होता है, जो बालक के भविष्य को निर्धारित करते है। वर्तमान समय में कोरोना काल में लंबे समय से स्कूल बंद है, और बच्चे घर पर ही है। कोरोना वायरस एक त्रासदी बन कर आया जिससे पूरा समाज मौजूदा वक्त से जूझ रहा है। समाज का शायद ही कोई वर्ग हो जो इसके प्रभाव से अछूता होगा।

समाजीकरण की प्रक्रिया इस त्रासदी में सबसे ज्यादा प्रभावित हुई, जिसके कारण समाज में कई तरह के उथल–पुथल हुई है, लेकिन इस त्रासदी में सबसे ज्यादा कोई प्रभावित हुआ तो वे है, वरिष्ठ नागरिक और बच्चे।

बच्चे जिनकों बाल्यवस्था में एक स्वंतत्र और गतिशील वातावरण की आवश्यकता होती है, वह कोरोना काल में घर की चार दीवारी में कैद है, स्कूल बंद है, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा ऑनलाइन क्लास की व्यवस्था की गई है। ऑनलाइन क्लास में बच्चों को टाइम–टेबल के साथ पढ़ाना भी शुरू किया गया। बच्चों की कक्षायें 30 मिनट रखी गई है, और हर पीरियड के बीच 15 मिनट का अंतराल है। बच्चों की ये क्लास अभिभावकों के मदद से मोबाइल, लैपटाप, विडियों कॉल के जरिये लिये जा रहें है। छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा लॉकडाउन के दौरान बच्चों को सूचारू अध्ययन के लिये शुरू की गई ई–लार्निंग व्यवस्था ''पढ़ाई तुंहार द्वार'' आज लाखों बच्चों के लिए वरदान साबित हुई है। आज शासकीय, अशासकीय सभी स्कूलों में बच्चों के लिए ऑनलाइन शिक्षा चल रही है। माता–पिता अभिभावकों के सहयोग से बच्चे आज इसी माध्यम से शिक्षा ग्रहण कर रहे है।

शोध के उद्देश्य

प्राथमिक स्कूल के बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा पर माता–पिता का विश्वास एवं दृष्टिकोण।

पद्धति

कोविड–19 के कारण स्कूलों में विगत एक वर्ष से ऑनलाइन शिक्षा दी जा रही हैं। भिलाई के 04 स्कूल जिसमें प्राथमिक कक्षायें संचालित होती है, उन अभिभावकों से जिनके बच्चे वर्तमान में प्रायमरी कक्षा में पढ़ रहे है, प्रश्नावली एवं सोशल मीडिया के द्वारा शोघ संबंधी जानकारी पता लगाया गया। शोध अध्ययन के लिये शीर्षक शोध के अनुसार छत्तीसगढ़ भिलाई शहर, जिला दुर्ग, के डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, माँ शारदा पब्लिक स्कूल सेक्टर–9, शंकरा पब्लिक स्कूल एवं शकुंतला पब्लिक स्कूल के 50 अविभावको को शोध के लिये चयन किया गया। तथ्य संकलन के लिये प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया जो कि ई–मेल एवं व्हॉटस–एप के द्वारा शोद्यार्थी के द्वारा प्रेषित किया गया। शोध संकलन में कई अभिभावक का जो कि ई–मेल से परिचित नही थे इनसे फोन के द्वारा एवं साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया। साक्षात्कार करते समय मास्क का प्रयोग एवं सामाजिक दूरी का विशेष ध्यान रखा गया।

तथ्य संकलन

शोध अध्ययन के लिये पूछे गये प्रश्नावली साक्षात्कार एवं फोन के द्वारा दिये गये व्यक्तव्य उत्तर को संकलित किया गया। तथ्यों में व्यक्तिगत बातों को गोपनीय रखते हुए कोरोना वायरस के शासकीय निर्देशों का कड़ाई से पालन किया गया।

परिणाम एवं विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया कि प्राथमिक बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा पद्धति कितनी प्रभावशील है एवं इस पद्धति में अभिभावको का दृष्टिकोण एवं बच्चों पर इसका प्रभाव पर तथ्य संकलित किये गये।

क्र.	दृष्टिकोण के प्रकार	आवृति	प्रतिशत
1	छोटे बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा सीखने की चुनौती	06	12 प्रतिशत
2	ऑनलाइन शिक्षा में तकनिकी समस्या की चुनौती	05	10 प्रतिशत
3	ऑनलाइन शिक्षा में छोटे बच्चो के अभिभावकों के कम्प्यूटर ज्ञान की चुनौती	05	10 प्रतिशत
4	ऑनलाइन शिक्षा में छोटे बच्चो के सीखने में चुनौती	07	14 प्रतिशत
5	ऑनलाइन शिक्षा में छोटे बच्चो के संचार संबंधी बाधा	06	12 प्रतिशत
6	ऑनलाइन शिक्षा में छोटे बच्चो का वर्चुवल एडोजमेंट	08	16 प्रतिशत
7	ऑनलाइन शिक्षा में छोटे बच्चो के अभिभावकों की व्यस्तता	05	10 प्रतिशत
8	छोटे बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा के प्रति रूचि का कम होना	08	16 प्रतिशत
	योग	**50**	**100 प्रतिशत**

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

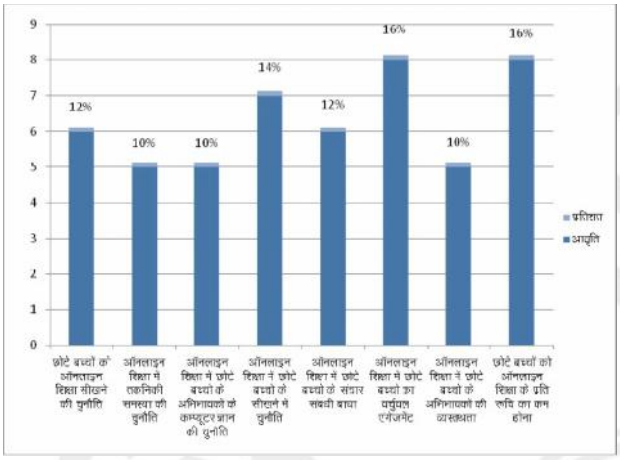

निष्कर्ष

ऑनलाइन शिक्षा में छोटे बच्चों को सीखने में 14 प्रतिशत लोगो को समस्या आ रही थी, क्योंकि इस उम्र के बच्चे स्वयं क्लास Join नही कर सकते इसके लिये उन्हें दुसरों की मदद लेनी पड़ती है, साथ ही बाल्यवस्था में एकाग्रता की कमी के कारण भी वे लगातार ध्यान नही दे पाते।

संचार संबंधी समस्या

ऑनलाइन में छोटे बच्चों को संचार संबंधी समस्या भी 12 प्रतिशत देखने को मिली। ऑनलाइन के शब्द, Audio, Vedio, PDF Record ये शब्द बच्चों के लिये नये होते है, इन्हें खुद समझना इनके लिये कठिन होता है।

वर्चुवल एंगेजमेंट

ऑनलाइन वर्चुवल एंगेजमेंट में 16 प्रतिशत बच्चों को समस्या आ रही है। लगातार एकाग्र होकर बैठना, सुनना और समझना छोटे बच्चों के लिये एवं अभिभावकों के लिये कठिन चुनौती होता है।

अभिभावकों की व्यस्तता

अभिभावकों की व्यस्तता के कारण भी बच्चे कई बार क्लास अटैंड नही कर पाते है। अभिभावक अपने काम–काज और व्यवसाय में व्यस्त रहते हुए पूरे समय बच्चों की क्लास में बच्चे के साथ क्लास अटैंड नही कर सकते। 10 प्रतिशत बच्चों की इस तरह की समस्या देखने को मिली।

ऑनलाइन क्लास में बच्चों की रूचि कम

ऑनलाइन शिक्षा में छोटे बच्चों की रूचि कम होनें से भी 10 प्रतिशत बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हुई। छोटे बच्चे फिजिकल क्लास में शिक्षक के सामने अपनी उपस्थिति एवं सीखने में ज्यादा रूचि लेते है, पर स्क्रीन पर उन्हें पढ़ाई रूचिकर नही लगती है।

- छोटे बच्चों में ऑनलाइन सीखना बहुत ही कठिन चुनौती है। 12 प्रतिशत बच्चे स्क्रीन क्लास में उपस्थित होने अभिभावकों के लिये सिरदर्द हो गया है।
- ऑनलाइन कक्षाओं में 10 प्रतिशत बच्चे नेट की समस्या, स्मार्ट फोन, लिंक अलग–अलग प्लेटफार्म में क्लास होने से अभिभावकों के साथ बच्चे भी बहुत गंभीरता से कक्षाओं में शामिल नही हो पाते।
- ऑनलाइन कक्षाओं में 10 प्रतिशत ऐसे बच्चे भी है, जिनके अभिभावकों के लिये कम्प्यूटर, स्मार्ट फोन, नेट, लिंक, विडियों लेक्चर, PDF, असाइनमेंट ऐसे तकनीकी शब्द से बहुत अधिक परिचित नही है और ना ही इनका इन्हें ज्ञान है। ऐसे में बच्चों और अभिभावकों को ऑनलाइन क्लास भी एक चुनौती है।

उपसंहार

प्राथमिक स्कूल की शिक्षा ऑनलाइन बच्चों के लियें एवं उनके अभिभावकों के लिये कठिन चुनौती है। लम्बे समय से स्कूल बंद होनें से समय की बरबादी से बचने तथा बच्चों को व्यस्त रखने में ऑनलाइन कक्षा एक सकारात्मक दिशा में किया जा रहा प्रयास है। पढ़ाई से दूर होते बच्चे भले ही 100 प्रतिशत समझ न पाये परंतु कुछ कक्षा से जुड़े रहने का कम समय में क्लास होने से समय की पाबंदी बच्चों पर है। अभिभावक लगातार यदि ऑनलाइन कक्षा से बच्चों को जोड़े रखे तो अभिभावक और बच्चे दोनों ही इसके अभ्यस्त हो जायेगें। भौतिक कक्षा का स्वरूप भले ही ऑनलाइन न ले सके पर पढ़ाई से जुड़े रहने का एक वर्तमान माध्यम ऑनलाइन ही है। अतः इसे अपनाना हमारी आवश्यकता एवं मजबूरी दोनों है।

सुझाव

- ऑनलाइन शिक्षा के प्रति बच्चों एवं अभिभावको में जागरूकता लाने की आवश्यकता है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी अच्छी हो इसका प्रयास करना चाहिये।
- ऑनलाइन शिक्षा देने वाले शिक्षको के लिये वेबीनार, वर्कशॉप आयोजित किया जाये तथा यह भी ध्यान रखा जावे कि ऑनलाइन जानकारी देने वाला व्यक्ति विषय विशेषज्ञ हों।
- ऑनलाइन शिक्षा बोझिल न हो इसे रूचिकर बनाना होगा।
- सभी स्कूलों में Broad-Band सेवा और ऑनलाइन शिक्षा के लिये उचित यंत्र मुहैया कराया जावे।

संदर्भ सूची

1. Agrawal, Neeta, Human Development.
2. http://www.indiaeducation.net
3. http://www.education.com

****